Shot on YII
Vivo Al camera अंचा ववड़ा हिमालम, आकारा चूमता है, नीचे परवार पण तला, नित रिमंद्रा इतुमता है, गंगा पिकत यमुना, निद्भा लहर रही है, पल-पल नभी इत्टारू, पण-पण इहर रही है, वह पुण्यभूमि मेरी, लह जनमभूमि मेरी, वह स्वर्णभूमि मेरी, लह जनमभूमि मेरी, इसने अनेक इसते, जिस्कार पहाड़ियों में, चिड़िया - चहक रही है, हो मस्त इसड़ियों में, अम्पड़ियां हानी है, कोक्त प्रकारते हैं, वहती सत्त्र्य पवन है, तन मन संवारती है, वह हाम भूमि मेरी, वह कार्म भूमि मेरी, वह एम्मभूमि मेरी, वह मातृभूमि मेरी, \_ सोहनलाल द्विदे 1. परवारना + ह्योना



